अनुंसधान निदेशालय

संस्थागत ढांचा

कृषि अनुसंधान निदेशालय का मुख्य कार्य प्रयोगों की योजना, समन्वय, निगरानी एवं आवश्यकता जनित कृषि उत्पादन तकनीकी व प्रौद्योगिकी का विकास करना हैं। निदेशालय की देखरेख में अनुसंधान के कार्य शस्य जलवायु खण्ड की कृषि आवश्यकतानुसार ही शोध कार्य किये जाते हैं एवं कृषि अनुसंधान के विभिन्न कार्य कृषि जलवायु खण्ड अनुसार नीचे दर्शाए कार्यालयों के माध्यम किये जा रहे हैं।

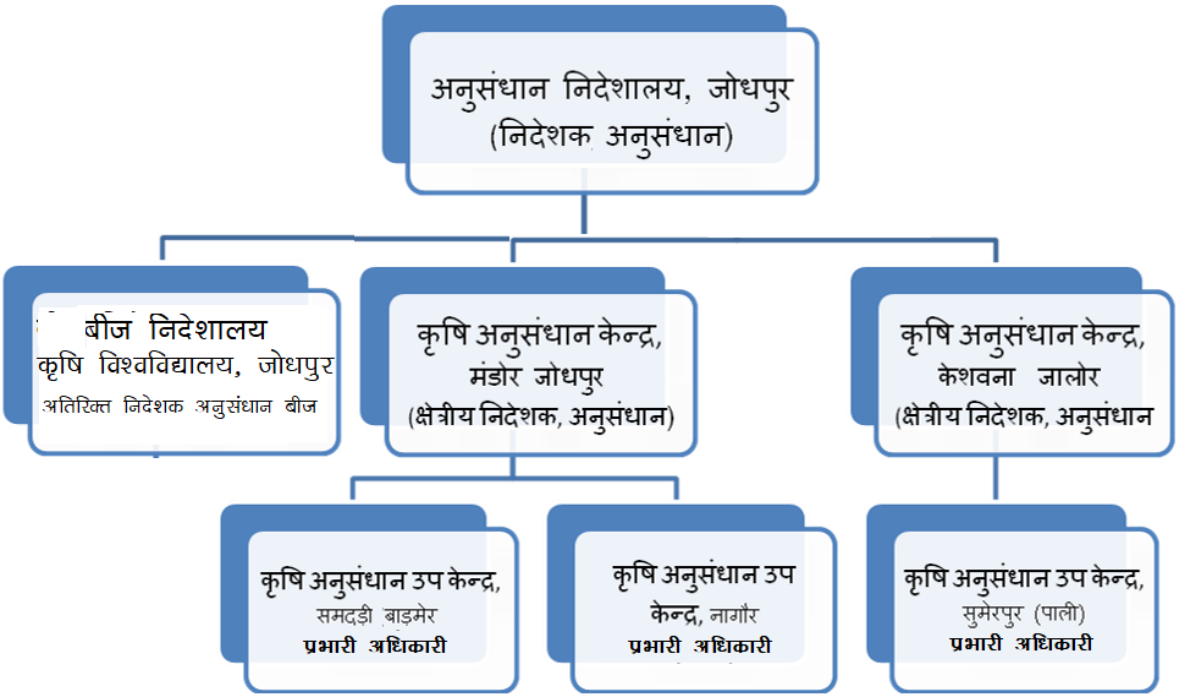

अनुसंधान निदेशालय कार्यक्षेत्र

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के क्षेत्राधिकार में राजस्थान के 6 जिले शामिल हैं, जिसमें कृषि जलवावीय खण्ड 1–अ (शुष्क पश्चिमी मैदानी क्षेत्र) में बाड़मेर व जोधपुर जिले, खण्ड 2–ब (लूणी नदी का अंर्तवर्ती मैदानी क्षेत्र) में पाली, सिरोही व जालोर जिले तथा खण्ड 2–अ (अंर्तक्षेत्रीय जलोत्सरण का अर्न्तवर्ती मैदान क्षेत्र) में नागौर जिला शामिल हैं। निदेशालय के प्रत्येक केन्द्र व उप–केन्द्र के लिए उस क्षेत्र की कृषि परिस्थितियों को मध्यनजर रखते हुए नेतृत्व उत्तरदायित्व एवं सत्यापितकरण उत्तरदायित्व निर्धारित हैं।

अनुसंधान निदेशालय के प्रमुख उद्देश्य

- खरीफ एवं रबी की प्रमुख फसलों की उपयुक्त किस्मों की पहचान, विकास व उन्नत उत्पादन व संरक्षण तकनीकी विकसित करना।
- मुख्य फसलों की जल्दी पकने, सूखा सहने तथा कीड़े व रोगों के प्रति सहनशील/प्रतिरोधी किस्में विकसित करना।
- फसल उगाने हेतु वर्षा आधारित *स्वस्थाने* नमी संरक्षण तकनीकी विकसित करना।

- समन्वित खरपतवार, पौषक तत्व, कीड़े एवं बिमारियों का प्रबन्धन, विभिन्न फसलों की फसल ज्यामिति, अन्तराशस्य और मिलवां फसल प्रणाली विकसित करना।
- विभिन्न फसलों के लिए दबाव सिंचाई प्रणाली का स्वचलनीकरण।
- विभिन्न फसलों विशेषकर सब्जियों, मसालों एवं औषधीय फसलों में जैविक कृषि तकनीकी विकसित करना।
- बागवानी फसलों के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकीयों का विकास करना।
- कृषि जैव विविधता संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु प्रयास करना।
- विभिन्न कृषि क्रियाओं का मशीनीकरण कर लागत कम करना।
- प्रजनक, आधार, प्रमाणित बीज एंव साथ ही सत्यापित बीज उत्पादन करना।